सेन फ्रान्सिसको। नवनिर्वाचित मेयर एडविन ली के इनॉगरल ईव इंटरफेथ प्रेयर सर्विस के कार्यक्रम में उनसे मुलाकात कर बधाई देते हुए ब्र.कु. चंद्रू।

देवघर-झारखण्ड। 'तनावमुक्त जीवन शैली' विषय पर कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में एस.बी.आई. लर्निंग सेंटर के महाप्रबंधक सतीश कुमार सिंह, ब्र.कु. रीता, शिल्पी बहन, मेघा बहन, ब्र.कु. सत्यनारायण, सुनील भाई व बैंक के कर्मचारी गण।

मोहाली-पंजाब। ब्रह्माबाबा की 47वीं पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. रमा।

गया-नूर कम्पाउण्ड। प्रजापिता ब्रह्माबाबा के स्मृति दिवस पर ब्रह्माबाबा के स्मृति चिन्ह पर पुष्पचक्र अर्पित करते हुए बी.आर.एम. कॉलेज के प्रिन्सीपल डॉ. बृजेन्द्र कुमार, रामानुज मठ के मठाधीश रामकुमार मिश्रा, गया कॉलेज के संस्कृत विख्याता ब्रजभूषण प्रसाद सिंह एवं ब्र.कु. शीला।

देहरादून। ब्रह्माबाबा के स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं किशोर उपाध्याय, प्रेसीडेंट,उत्तराखण्ड कांग्रेस, सुरेन्द्र कुमार,मीडिया इन चार्ज टू सी.एम., ब्र.कु. प्रेमलता, ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. नीलम व अन्य।

हरिद्वार। प्रजापिता ब्रह्माबाबा के पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माबाबा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए थाना भवन आश्रम भूपतवाला हरिद्वार के अध्यक्ष महन्त सतपाल ब्रह्मचारी जी।

आने वाली शिवरात्रि की तैयारी

यहाँ पर कोई पुरुष या स्त्री की बात नहीं है कि स्त्री को वर की आवश्यकता है पुरुष को नहीं है, यहाँ हर किसी को सहारे या साथी की ज़रूरत है। यहाँ बात आत्मा की है, यहाँ हर आत्मा आज खाली है, उसके अंदर बिल्कुल ताकत नहीं है, न खुद को सम्भालने की, न दूसरों को सम्भालने की, वो सम्भाल तभी पायेगा जब उसे कोई सच्चा सहारा मिलेगा। सच्चा साथी व सच्चा सहारा एक सत्य परमपिता ही हो सकता है, और कोई नहीं। उस सहारे की आश हमें वो सबकुछ प्रदान कर देगी जिसकी हमको कई जन्मों से तलाश है। इसलिए इस शिवरात्रि पर हम सभी व्रत लें कि हम अपने आपको पहले वरने योग्य बनायेंगे और उसके लिए शिव से प्रीत जुटायेंगे।

शिवरात्रि पर्व के आने की जैसे ही कुछ भनक लगती, सभी लोग अपनी-अपनी तैयारियों में जुट जाते हैं। फल महंगे होने लग जाते हैं, बेलपत्र जिसको पूरे साल कोई ऐसे नहीं पूछता, लेकिन शिवरात्रि के लिए तो उसकी कीमत ऐसे बढ़ती है कि वो आसमान छूने लग जाते हैं। जितना जो प्यार से इसके लिए तैयारी करता, उसको शायद वरदान वैसा ही प्राप्त होता, ऐसा सभी का मानना है। हैरानी की बात तो यह है कि कौमार्य बालिकाएँ अपने सुंदर वर की कामना हेतु शिव पूजन करती हैं, करना भी चाहिए, लेकिन क्या ऐसा कहीं लिखा है कि शिव पूजने से हमको अच्छे वर की प्राप्ति हो सकती है या सिर्फ मान्यता है।

परमात्मा जैसा साथी

आप सबको सोचकर थोड़ा सा आश्चर्य ज़रूर होगा, किंतु सत्य यही है कि परमात्मा के पूजन से हमें परमात्मा जैसे साथी की कामना होती है। सापेक्ष भाव यह है, जैसे उन्हें कहते हैं परमेश्वर और इन्हें कहते हैं पति-परमेश्वर। अर्थात् जो वर मिलेगा उसका सारा व्यवहार, आचार, आचरण सबकुछ परमेश्वर जैसा होना चाहिए। क्या हम सही सोच रहे हैं, अगर नहीं सोच रहे तो कहीं न कहीं कुछ इसमें गलत हो रहा है। इसका आप सबको भी तो अनुभव होगा ही ना। क्योंकि आज के पुरुष की जो मनोस्थिति है, उस मनोस्थिति को आँका नहीं जा सकता। आज भी स्त्री को वो चरणों की धूल मानते और कहते कि आपका बाहर से या बाहरी दुनिया से क्या वास्ता है, आप सिर्फ चार-दीवारी के अंदर रह सबकी सेवा करो, यही आपका धर्म है। अब आप बतायें, जो धर्म की बात कर रहे हैं, क्या वे धर्म के अंशमात्र को भी धारण करते हैं? कहने को पति-परमेश्वर और आचरण कैसा!

परमात्मा शिव को वरण करें

तो आज हम एक रहस्य आपको बताना चाहेंगे जिससे आपको जो वर मिलेगा वो आपका ही होगा और एक जन्म के लिए नहीं, अनेक जन्मों के लिए होगा। बस इस शिवरात्रि पर आपको करना क्या है कि, परमात्मा शिव को वरण करना है सच्चे मन से। सच्चा मन अर्थात् परमात्मा किसी स्थूल चीज़ का भूखा नहीं है क्योंकि वो अभोक्ता है, अकर्ता है, तो उसे कोई भी स्थूल चीज़, भांग, धतूरा, बेलपत्र, गन्ना आदि खाने की आवश्यकता नहीं है। यदि खाने की आवश्यकता नहीं है, तो आपको चढ़ाने की भी आवश्यकता नहीं है। दरअसल, ये सारी चीज़ें जिसमें कुछ जहरीली चीज़ें भी हैं, अब परमात्मा चलो अच्छी चीज़ खाये, लेकिन खराब चीज़ क्यों खाये! तो इसका कोई तो आध्यात्मिक रहस्य होगा। आज तक हम सबकुछ करते आये लेकिन रहस्य को नहीं जान पाये।

होता अमरत्व का वरदान प्राप्त

हमारा मन आज सबसे ज़्यादा डरा हुआ है, उसमें भय है कि मैं मर गया तो, बीमार हो गया तो, मेरा पति चला गया तो, मेरा बच्चा चला गया तो! आदि आदि। इन डरों के कारण ही संसार में हर प्राणी मात्र देवों के देव महादेव शिव की पूजा करता है। कहते हैं कि शिव की पूजा करने से अमरत्व का वरदान प्राप्त होता है, लेकिन अमर बनने के लिए हम सिर्फ कुछ कहीं चढ़ा के अमर बन सकते हैं क्या, हाँ, कुछ खाकर ज़रूर अमर बन सकते हैं। तो यहाँ पर खाना क्या है, चढ़ाना क्या है। परमात्मा कहते, जिस प्रकार शरीर को पाँच तरह के भोजन की आवश्यकता होती है, जैसे पृथ्वी को अन्न से, जल तत्व को जल से, अग्नि तत्व को हम अग्नि से अर्थात् अग्नि पैदा करने वाले पदार्थों से भरपूर करते हैं, ठीक वैसे ही मन को ठीक करने के लिए हमको सात प्रकार के भोजन को खाने की आवश्यकता पड़ती है जिसमें शांति, प्रेम, पवित्रता, सुख, आनंद व शक्ति और इन सबकी प्राप्ति के लिए ज्ञान की आवश्यकता है, तो इन सात तरह के भोजन को खाने से मन बहुत शक्तिशाली होता है। दरअसल, अगर दूसरे शब्दों में कहें तो हम इन सातों तरह के भोजन के साथ ही शुरु से रहे हैं, पले-बढ़े हैं। अगर यह रोज़ हमारी खुराक में शामिल हो जायें तो हमें अमरत्व प्राप्त करने से कोई रोक नहीं सकता। यही तो हमें खाना है।

अब चढ़ाना क्या है? मन को खराब करने वाले सात तरह की विषैली चीज़ें हैं जिसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, आलस्य और भय, इसी का यादगार शिवरात्रि पर बहुत सारे फल और फूल चढ़ाते हैं जो कहीं ना कहीं तो इन सारी चीज़ों के साथ जुड़े हुए हैं। अब चढ़ाना ये है और चढ़ा देते हैं स्थूल चीज़ें। परमात्मा कहता, चाहिए तो तुमको अच्छा वर जो परमात्मा जैसा हो, लेकिन आप कैसे हो! आपमें भी तो परमात्मा जैसा वर प्राप्त करने की योग्यता होनी चाहिए ना। सोचना आपको है, हमें नहीं। क्योंकि वर उसे अच्छा मिलेगा जिसके अंदर इन सातों गुणों का समावेश होगा, और आज के परिवेश में तो यह तो असंभव जैसा ही है। हाँ, आप आगे के लिए ऐसी तैयारी कर सकते हैं, क्योंकि इस दुनिया में हर जगर अपवित्रता का माहौल है, और वो अपनी चरम सीमा लांघ चुका है। शायद इसीलिए हमें पवित्रता के सागर परमात्मा की आवश्यकता पड़ रही है, उसको वरने की आवश्यकता पड़ रही है।

इसलिए शिवरात्रि का पर्व इसी का यादगार है कि जब धरा पर सारी आत्मायें आ जाती हैं और हर जगर अपवित्रता और अमानवीय व्यवहार का ताँता लग जाता है तो परमात्मा शिव निराकार इस धरती पर अवतरित होकर इस अज्ञानता रूपी रात का शमन करते हैं, जिसमें सभी मनुष्यात्मायें परमात्मा को अपना सब अवगुण दान कर उस परमात्मा से वरदान प्राप्त करते हैं। वरदान का अर्थ यहाँ यही है कि जैसे ही हम अवगुण छोड़ते, गुणों को धारण करते तो स्वतः ही परमात्मा से हमें वरदान मिलने लग जाते। ये एक सार्वभौमिक सत्य है।

सहारा एक सत्य परमपिता का

यहाँ पर कोई पुरुष या स्त्री की बात नहीं है कि स्त्री को वर की आवश्यकता है पुरुष को नहीं हैं, यहाँ हर किसी को सहारे या साथी की ज़रूरत है। यहाँ बात आत्मा की है, यहाँ हर आत्मा आज खाली है, उसके अंदर बिल्कुल ताकत नहीं है, न खुद को सम्भालने की, न दूसरों को सम्भालने की, वो सम्भाल तभी पायेगा जब उसे कोई सच्चा सहारा मिलेगा। सच्चा साथी व सच्चा सहारा एक सत्य परमपिता ही हो सकता है और कोई नहीं। उस सहारे की आश हमें वो सबकुछ प्रदान कर देगी जिसकी हमको कई जन्मों से तलाश है। इसलिए इस शिवरात्रि पर हम सभी व्रत लें कि हम अपने आपको पहले वरने योग्य बनायेंगे और उसके लिए शिव से प्रीत जुटायेंगे।